समकालीन विश्व राजनीति

Chapter :- दो ध्रुवीयता का अंत

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

CLASSES AVAILABLE :-

6th to 10th

- Maths
- Science
- English
- Sst

11th & 12th

- Pol. Science
- History
- Economics
- Accounts
- Maths
- English
- sociology

C-136A, Laxmipark, Near M. S. Memorial Public School, Nangloi, Delhi - 110041

M H Rabbani : 8700467219

(Chief Mentor & Coordinator)

@vidyadrishti

समकालीन विश्व राजनीती -12th

by :- M H RABBANI

दो ध्रुवीयता का अंत

■ 1917 में समाजवादी क्रांति (रुसी क्रांति / बोल्शेविक क्रांति) हुई।
■ इस क्रांति के माध्यम से "जार निकोलस द्वितीय " के सत्ता (राजतंत्र) की समाप्ति हो गई।

समाजवादी क्रांति की विशेषताएँ

👉 यह क्रांति पूंजीवादी व्यस्था के विरोध में हुई थी।
👉 **यह क्रांति प्रेरित थी -**
1. समाजवाद के आदर्शो से
2. समतामूलक समाज के निर्माण की जरूरत से

👉 यह मानव इतिहास में सबसे बड़ी कोशिश थी -
1. निजी संपत्ति की व्यस्था / संस्था को समाप्त करने की
2. समाज को समानता के सिद्धांत पर रचने की

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

सोवियत संघ की स्थापना

👉 रुसी क्रांति के 5 वर्ष बाद 1922 में समाजवादी सोवियत गणराज्य की स्थापना हुई।
👉 USSR - Union of Soviet Socialist Republics
👉 यह **15 गणराज्यों का एक समूह** था।
👉 संस्थापक अध्यक्ष - ब्लादिमीर लेनिन

बर्लिन की दीवार

👉 **विभाजन का प्रतीक** - पूँजीवादी दुनिया और साम्यवादी दुनिया के बीच
👉 **अलग करती थी** - पश्चिमी बर्लिन को पूर्वी बर्लिन से
👉 **निर्माण** - 1961 ई० में
👉 9 नवंबर 1989 को पूर्वी जर्मनी की जनता के द्वारा मुक्त आवागमन के लिए इसे गिरा दिया गया।
👉 150 कम लम्बी,28 वर्षो तक ख़डी रही
👉 **बर्लिन की दीवार गिरने के परिणाम -**
1. दूसरी दुनिया अथार्त सम्यवादी खेमे के पतन की शरुआत।
2. शीतयुद्ध की समाप्ति
3. एकध्रुवीय विश्व का निर्माण
4. जर्मनी का एकीकरण

🔴 **अतः इसका ऐतिहासिक महत्व है।**

@vidyadrishti

सोवियत प्रणाली की विशेषताएं

by :- M H RABBANI

A. आधार

👉 पूँजीवादी व्यवस्था का विरोध
👉 समाजवाद का आदर्श
👉 समतामूलक समाज का निर्माण

B. अर्थव्यस्था

👉 राज्य के द्वारा नियंत्रित
👉 नियोजित एवं योजनाबद्ध

C. संसाधनों पर स्वामित्व

👉 निजी संपत्ति का अस्तित्व नहीं
👉 मिल्कयत का प्रमुख रूप राज्य का स्वामित्व था
👉 उत्पादन के सभी साधनों, भूमि एवं अन्य संसाधनों पर राज्य का नियंत्रण

D. राजनीतिक प्रणाली की धुरी

👉 राज्य और "पार्टी की संस्था " को महत्व दिया गया
👉 एकदलीय व्यवस्था को अपनाया गया
👉 सोवियत राजनीतिक प्रणाली की धुरी कम्युनिस्ट पार्टी थी

E. नागरिक सुविधा/ न्यूनतम जीवन स्तर की गारंटी

👉 सरकार द्वारा सभी नागरिकों के लिए एक न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित किया गया था।
👉 स्वास्थ्य, शिक्षा एवं लोककल्याण से संबंधित बुनियादी जरूरत की चीजें सरकार द्वारा रियायती दर पर उपलब्ध कराई जाती थी।

F. उन्नत उद्योग

👉 संचार, परिवहन, उपभोक्ता उद्योग उन्नत स्थिति में थें।

G. रोजगार की स्थिति

👉 बेरोजगारी की समस्या नहीं थी।

H. पूर्वी यूरोप की अर्थव्यस्था का रूपांत्रण

👉 पूर्वी यूरोप के देशों को फासीवादी ताकतों से आजाद करा कर उनकी राजनीतिक और आर्थिक व्यस्था को समाजवादी प्रणाली के तर्ज पर ढाला गया।

सोवियत प्रणाली की राजनीतिक सीमाएं/ कमीयाँ

A. नौकरशाही

👉 सोवियत प्रणाली पर नौकरशाही का शिकंजा धीरे धीरे मजबूत होता गया।

B. सत्तावादी प्रणाली

👉 यह प्रणाली समय के साथ - साथ सत्तावादी होती गई जिसके कारण नागरिकों का जीवन कठिन होता गया।
👉 नागरिकों के पास लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की आजादी नही रही।

C. एक दलीय व्यवस्था

👉 सोवियत संघ के सभी आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं पर कम्युनिस्ट पार्टी का नियंत्रण था।
👉 यह पार्टी अब जनता के प्रति जवाबदेह नही रह गई थी।

D. रूस का प्रभुत्व

👉 15 गणराज्यों का समूह होने के बावजूद भी हर तरह के मामलों में या निर्णयों में रूस का वर्चस्व था
👉 इससे अन्य गणराज्यों की जनता उपेक्षित एवं दमित महसूस कर रही थी।

E. केंद्रीकृत शासन

👉 15 गणराज्यों का एक विशाल सम्राज्य फिर भी शासन केंद्र (मास्को) से हो रहा था

सोवियत प्रणाली की राजनीतिक सीमाएं/ कमीयाँ

A. गतिरुद्ध अर्थव्यवस्था

👉 कई वर्षो तक सोवियत अर्थव्यवस्था गतिरुद्ध रही, जिससे उपभोक्ता वस्तुओं की कमी होने लगी।

👉 खाद्यान का आयात साल दर साल बश्ता जा रहा था।

👉 अतः अपनी सोवियत प्रणाली पर जनता संदेह करने लगी।

B . पिछड़ापन

👉 प्रोद्योगिकी एवं आधारभुत ढांचे के मामले में सोवियत संघ पश्चिम के देशों से पिछड़ चूका था।

C . संसाधनों का दुरूपयोग

👉 अधिकांश संसाधन परमाणु हथियार एवं सैन्य समाग्री पर खर्च किए गए।

👉 पूर्वी यूरोप के पिछलग्गु देशों के विकास के लिए आर्थिक सहायता।

👉 विभिन्न क्षेत्रों में युद्ध में संलिप्तता, जैसे - **1979 में अफगानिस्तान पर आक्रमण**

👉 इन सभी कारणों से सोवियत अर्थव्यवस्था पर गहरा दबाव पड़ा जिसका सामना सोवियत अर्थव्यस्था न कर सकी।

निष्कर्ष :-

■ वस्तुतः सोवियत प्रणाली नागरिकों की राजनीतिक एवं आर्थिक आकांक्षाओं को पूरा न कर सकी।

■ राजनीतिक एवं आर्थिक संस्थाओं की आंतरिक कमजोरी के कारण यह प्रणाली पूरी तरह विफल रही

■ अंततः सोवियत संघ का विघटन हो गया।

सोवियत संघ के विघटन का घटनाक्रम

■ **मार्च 1985**

👉 मिखाइल गोर्बाचेव कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बनें।

👉 बोरिस येल्तसिन रुसी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख बनें।

👉 सुधारों की शरुवात

■ **1988**

👉 लिथुआनिया में स्वतंत्रता संघर्ष।

👉 लताविया और एस्टोनिया में भी संघर्ष शरू।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

■ **अक्टूबर 1989**

👉 सोवियत संघ ने घोषणा की कि "वारसा समझौते " के सदस्य अपना भविष्य तय करने के लिए स्वतंत्र।

👉 नवंबर में बर्लिन की दीवार गिरी।

■ **फरवरी 1990**

👉 गोर्बाचेव द्वारा ड्यूमा (सोवियत संसद) के चुनाव के लिए बहुदलीय शासन प्रणाली की शरुवात।

👉 लगभग 70 वर्ष पुराना कम्युनिस्ट पार्टी का एकाधिकार समाप्त हो गया।

■ **मार्च 1990**

👉 **लिथुआनिया स्वतंत्रता की घोषणा करने वाला सबसे पहला सोवियत गणराज्य।**

■ **जून 1990**

👉 रुसी संसद ने खुद को सोवियत संघ से स्वतंत्र घोषित किया।

■ **जून 1991**

👉 येल्तसिन ने कम्युनिस्ट पार्टी से इस्तीफा दिया और रूस के राष्ट्रपति बनें।

■ **अगस्त 1991**

👉 गरमपंथियों द्वारा गोर्बाचेव के तख्तापलट का असफल प्रयास किया गया।

by :- M H RABBANI

■ **सितम्बर 1991**

👉 लिथुआनिया, लताविया और एस्टोनिया UNO के सदस्य बनें।

■ **दिसंबर 1991**

👉 रूस, बेलारूस और युक्रेन द्वारा सोवियत संघ निर्माण (1922) की संधि की समाप्ति का फैसला कर राष्ट्रकूल का निर्माण किया।

👉 अर्मेनिया, अजरबैजान, ताजिकिस्तान, किर्गीझस्तान, तुर्केमिनिस्तान, उज़्बेकिस्तान, कज़ाकिस्तान, माल्दोवा राष्ट्रकूल में शामिल।

👉 1993 में जार्जिया राष्ट्रकूल का सदस्य बना।

👉 रूस को UNO में सोवियत सीट मिली।

■ **25 दिसंबर 1991**

👉 गोर्बाचेव का सोवियत संघ के राष्ट्रपति पद से इस्तीफा।
सोवियत संघ का अंत।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

सोवियत संघ के प्रमुख नेता

ब्लादिमीर लेनिन

■ संस्थापक - बोल्शेविक कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत साम्यवादी गणराज्य के।
■ सिद्धांतकार - मार्क्सवाद के।
■ प्रेरणा स्त्रोत - साम्यवाद के।
■ नायक - 1917 की रुसी क्रांति के।

जोजेफ स्टालिन

■ उत्तराधिकारी - लेनिन के
■ औद्योगिकीकरण - बढ़ावा दिया
■ सामूहिकरण - कृषि का
■ जीत का श्रेय - द्वितीय विश्वयुद्ध में
■ तानाशाह - 1930 के दशक में पार्टी के आंतरिक विद्रोह का दमन किया, अतः इन्हे तानाशाह कहा गया।

निकिता खरुशचेव

■ राष्ट्रपति(USSR) - स्टालिन के बाद
■ आलोचक - स्टालिन के नेतृत्व शैली का
■ दमन - हंगरी के जनविद्रोह का
■ संकट - क्यूबा मिसाइल संकट
■ सुझाव - पश्चिम के साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व

by :- M H RABBANI

लिओनिड ब्रेझनेव

- राष्ट्रपति - निकिता के बाद
- दमन - चेकोसलोवाकिया के जनविद्रोह का
- आक्रमण - अफ़ग़ानिस्तान पर
- सुझाव - एशिया की सामूहिक सुरक्षा व्यस्था का सुझाव
- दौर - अमेरिका के साथ तनाव में कमी का दौर

मिखाइल गोर्बाचेव

- राष्ट्रपति - सोवियत संघ के अंतिम राष्ट्रपति
- सुधार - परेस्त्रोइका (पुनरर्चना) और ग्लासनोस्त (खुलेपन)
- सहायक - जर्मनी के एकीकरण में
- अमेरिका के साथ संबंध - हथियारों की होड़ पर रोक लगाई
- प्रमुख निर्णय - पूर्वी यूरोप और अफ़ग़ानिस्तान से सेना वापिस बुलाई
- समाप्ति - शीतयुद्ध समाप्त किया
- आरोप - सोवियत संघ के विघटन

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

बोरिस येल्तसिन

- राष्ट्रपति - रूस के प्रथम निर्वाचित राष्ट्रपति
- आलोचक - गोर्बाचेव के
- नेतृत्व - सोवियत संघ के खिलाफ विद्रोह का
- केंद्रीय भूमिका - सोवियत संघ के विघटन में
- जिम्मेदार - सम्यवाद से पूंजीवाद की ओर संक्रमण के कारण उस दौर में रुसी लोगों को हुए कष्ट के लिए जिम्मेदार

गोर्बाचेव और सोवियत संघ में सुधार

- 1980 के दशक के मध्य में मिखाइल गोर्बाचेव कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बनें।
- निम्न करकों ने उन्हें सोवियत संघ या सोवियत प्रणाली में सुधार लाने के लिए बाध्य किया :-

(1) पश्चिम के देशों से बराबरी

👉 संचार एवं प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में पश्चिम से बराबरी करने के लिए सुधार जरूरी थें।

(2) कम्युनिस्ट पार्टी की उदासीनता

👉 इस पार्टी का हर तरह के आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थाओं पर कठोर नियंत्रण था।
👉 लेकिन यह पार्टी 15 गणराज्यों की जनता की अपेक्षाओं के प्रति जवाबदेह नही रह गई थी।
👉 अतः सुधार जरूरी थें।

by :- M H RABBANI

(3) सोवियत प्रणाली की अक्षमता

👉 यह प्रणाली नागरिकों की आर्थिक एवं राजनीतिक आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पर रही थी।
👉 अतः अपनी प्रणाली पर जनता में बढ़ रहे असंतोष के कारण सुधार करना अनिवार्य था।

(4) गतिरुद्ध अर्थव्यवस्था

👉 उपभोक्ता वस्तुओं की कमी जिससे मुद्रास्फीति / महंगाई
👉 साल दर साल खाद्यान आयात में वृद्धि हो रही थी।
👉 अतः आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा राजव्यस्था को संदेह की दृष्टि से देखने लगा।

(5) जनआक्रोश

👉 जनता नौकरशाही तथा अफसरशाही की विलासिता से असंतुष्ट थी।

👉 कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों एवं अधिकारीयों को सामान्य नागरिक की तुलना में बहुत अधिक अधिकार प्राप्त थें।

👉 इन सबके खिलाफ में जनआक्रोश बढ़ रहा था।

■ **निष्कर्ष :-** अतः उपयुक्त कारणों से गोर्बाचेव को मजबूर होकर सोवियत प्रणाली में सुधार का प्रयास करना पड़ा।

सोवित प्रणाली में सुधार में गोर्बाचेव की भूमिका

■ गोर्बाचेव ने पश्चिमी देशो से बराबरी के लिए राजनीतिक सुधारो तथा लोकतांत्रिकरण का प्रयास किया।

■ अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए प्रशासनिक ढांचे में ढील देना शुरू किया।

■ इसके लिए पेरेसत्रोइका (पूर्नरचना) एव गलासनोस्त (खुलापन) नामक आर्थिक सुधार लागु किए।

■ विभिन्न साथियों के माध्यम से अमेरिका के साथ हथियारों की प्रतिस्पर्धा को कम करने प्रयास किया।

■ अफगानिस्तान और पूर्वी यूरोप से सेना बुला कर आर्थिक दवाब को कम करने के साथ शांति स्थापना का प्रयास किया

■ एकदलीय व्यवस्था की जगह बहुदलीय व्यवस्था की शुरुआत की।

गोर्बाचेव के द्वारा किए गए सुधारों के परिणाम / प्रभाव

(1) निराश जनता

👉 गोर्बाचेव के द्वारा किए जाने वाले सुधारों की गति जनता को बहुत धीमी लगी।

👉 अतः जनता गोर्बाचेव की कार्यपद्धति से निरास हो गई।

(2) कम्युनिस्ट पार्टी के द्वारा विरोध

👉 सुधारों के माध्यम से काम्युनिष्ट पार्टी के नेताओं एवं अधिकारीयों के विशेषाधिकार समाप्त हो रहे थें तथा उनकी शक्ति एवं अधिकारों में कटौती हुई।

👉 इन नेताओं के अनुसार गोर्बाचेव सुधार करने में जल्दीबाज़ी कर रहे थें।

👉 अतः इनके अपनी ही पार्टी के नेताओं ने इनका विरोध शरू कर दिया।

(3) लोकतान्त्रिक अधिकारों के माँग में वृद्धि

👉 सुधारों के माध्यम से जैसे ही जनता को थोड़ी बहुत स्वतंत्रता मिली उनकी अपेक्षाए और बढ़ गई।

👉 सुधारों ने जनता को स्वतंत्रता का वह स्वाद चखाया कि जनता ने साम्यवाद से मुँह ही मोड़ लिया।

(4) साम्यवाद से पूँजीवाद कि ओर संक्रमण

👉 जनता सोवियत प्रणाली की जगह पूरी तरह से लोकतान्त्रिक मूल्यों को लागु करवाने के लिए विरोध करने लगी।

👉 जनता के विरोध के दबाव में कई गणराज्यों ने साम्यवादी व्यवस्था को छोड़ कर पूँजीवादी व्यवस्था को अपनाना शरू कर दिया।

(5) अंततः सोवियत संघ का विघटन हो गया।

by :- M H RABBANI

सोवियत संघ के देशों में आपसी असंतोष के कारण

(1) समस्त संस्थाओं पर एक ही सत्ता अथार्थ कम्युनिस्ट पार्टी का नियंत्रण।
(2) अपने लोगों के राजनीतिक और आर्थिक आकांक्षाओं को पूरा करने में असमर्थतता।
(3) उत्पादकता, संचार, आधारभूत ढांचा एवं प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में पश्चिमी देशों से पिछरापन।
(4) उपभोक्ता वस्तु एवं सेवाओं के उत्पादन में कमी।

पूर्वी यूरोप में साम्यवादी सरकारों के पतन का कारण

■ गोर्बाचेव के द्वारा आर्थिक एवं राजनीतिक सुधारों का प्रयास किया गया।
■ इनसे जनता की अपेक्षाओं में वृद्धि हुई।
■ साथ ही साथ पश्चिमी यूरोप के देशों से पिछड़ेपन का भाव
■ अतः जनता ने सोवियत नियंत्रण एवं अपनी सम्यवादी सरकारों का विरोध करना शरू कर दिया।
■ जनता के विरोध के दबाव में इन सरकारों ने साम्यवाद को छोड़ कर पूँजीवाद को अपनाना शरू कर दिया।
■ इसप्रकार पूर्वी यूरोप में साम्यवादी सरकारों का एक एक कर पतन हो गया।

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

👉 मध्यपूर्व संकट - 1967 में इजराइल और अरब देशों के मध्य 6 दिन चले युद्ध को मध्यपूर्व संकट कहते हैं। इसने मध्यपूर्व के भौगोलिक नक्शे को बदल सिया था।
👉 पूँजीवादी खेमा - पहली दुनिया
👉 समाजवादी खेमा - दूसरी दुनिया
👉 नवस्वतंत्र राष्ट्र - तीसरी दुनिया
👉 हिंसक अलगाववादी आंदोलन - चेचन्या और दागिस्तान
👉 एकध्रुवीय व्यवस्था - विश्व में शक्ति का एकमात्र केंद्र होना
👉 CIS की स्थापना - 1991(वर्तमान 12 सदस्य)
👉 मध्य एशियाई गणराज्य - सोवियत संघ के साथ रहना चाहते थें
👉 रूस, युक्रेन और बेलरूस - सोवियत संघ की समाप्ति की घोषणा करने वाले गणराज्य
👉 युगोस्लाविया - बालकन क्षेत्र में सबसे घंटे संघर्ष
👉 उजबेकिस्तान के लोग - भारतीय फिल्मो के लिए ललाइत
👉 मित्र संधि - 1976, USSR और भारत के बीच 20 वर्ष के लिए

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

by :- M H RABBANI

Baltic गणराज्य

■ **Baltic सागर के पूर्व के देश**
- 👉 लिथुआनिया
- 👉 लताविया
- 👉 एस्टोनिया

■ **ये तीनों सदस्य हैं -**
- 👉 NATO
- 👉 EU
- 👉 EUROZONE
- 👉 OECD

बाल्कन गणराज्य

- स्लोवेनिया
- क्रोएशिया
- बोसनिया हर्ज़ेगोविना
- मोंटेनिग्रो
- अल्बानिया
- ग्रीस
- सर्बिया
- कोसोवो
- मैसिडोनिया
- ग्रीस
- रोमानिया
- बुलगारिया
- तुर्की

विद्या दृष्टि
The Vision of Education

by :- M H RABBANI

सोवियत संघ का विघटन

👉 25 दिसंबर 1991 को सोवियत संघ टूट गया और टूटने से 15 नए देश बने-

- आर्मीनिया
- अजरबैजान
- जॉर्जिया
- बेलारूस
- यूक्रेन
- रूस
- मालदोवा
- लिथुआनिया
- लातविया
- इस्टोनिया
- ताजिकिस्तान
- किर्गिस्तान
- तुर्कमेनिस्तान
- उज्बेकिस्तान
- कजाकिस्तान

सोवियत संघ के विघटन के कारण

(1) राजनीतिक आर्थिक संस्थाओं की कमजोरी

- राजनीतिक एवं आर्थिक संस्थाएं आंतरिक कमजोरी के कारण लोगों की अपेक्षा को पूरा नहीं कर पर रही थी।

(2) गतिरुद्ध अर्थव्यवस्था

- सोवियत प्रणाली के तहत अर्थव्यवस्था लम्बे समय तक गतिरुद्ध रही।
- इसके कारण उजभोक्ता वस्तुओं की बहुत कमी हो गई जिसके कारण मुद्रास्फीति में वृद्धि हुई।
- अतः जनता अपनी हिबराज्य व्यवस्था को संदेह की दृष्टि से देखने लगी।

(3) आर्थिक दबाव

- अमेरिका के साथ हथियारों की प्रतिस्पर्धा।
- पूर्वी यूरोप के देशों की आर्थिक मदद।
- पूर्वी यूरोप और अफ़ग़ानिस्तान जैसे देशों में सेना की तैनाती पर खर्च।
- उपरोक्त कारणों से सोवियत संघ पर गहरा आर्थिक दबाव बना जिसका सोवियत व्यवस्था सामना न कर सकी।

(4) निराश जनता

- पश्चिम देशों की तुलना में सोवियत संघ पिछड़ चूका था।
- अपने पिछड़ेपन की पहचान से लोगों को राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक रूप से धक्का लगा।
- अतः जनता में राजव्यवस्था को लेकर निराशा थी।

by :- M H RABBANI

(5) केंद्रीकृत शासन

- विशालता के बावजूद सम्पूर्ण सोवियत संघ पर केंद्र (मास्को) से शासन किया जा रहा था।

(6) रूस की प्रमुखता

- सोवियत संघ 15 गणराज्यों का समूह था लेकिन हर मामले में या निर्णयों में रूस का प्रभुत्व था।
- अतः अन्य गणराज्यों की जनता उपेक्षित एवं दमीत महसूस कर रही थी।

(7) कम्युनिस्ट पार्टी का एकाधिकार

- सोवियत संघ राजनीतिक एवं प्रशासनिक रूप से भी गतिरुद्ध हो चूका था।
- लगभग पिछले 70 वर्षो से शासन करने वाली पार्टी अब जनता के प्रति जवाबदेह नहीं रह गई थी
- पार्टी के सदस्यों को समान्य नागरिकों की तुलना में ज्यादा अधिकार प्राप्त थें।
- अतः जनता का भरोसा इस पार्टी एवं इनकी सरकार पर से जाता रहा।

(8) सोवियत प्रणाली पर नौकरशाही का सिकंजा

- यह प्रणाली सत्तावादी हो गई थी।
- नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण नागरिकों का जीवन कठिन होता गया।

(9) तत्कालीन एवं प्रमुख कारण

- राष्ट्रीयता, समप्रभुता की भावना का उभार सोवियत संघ के विघटन का अंतिम और सर्वाधिक तत्कालीन कारण सिद्ध हुआ।

�� निष्कर्ष -

👉 वस्तुतः गतिरुद्ध प्रशासन, भारी भ्रष्टाचार
👉 गलतियों को सुधारने में व्यवस्था की अक्षमता
👉 शासन में ज्यादा खुलापन (पारदर्शिता) लाने के प्रति अनिक्षा
👉 विशालता के बावजूद सत्ता के केंद्रिकरण इत्यादि सोवियत संघ के विघटन के कारण बनें।

सोवियत संघ के विघटन से परिवर्तन एवं प्रभाव

👉 सोवियत संघ के विघटन से मुख्यतः तीन प्रकार के दूरगामी परिवर्तन हुए।
👉 प्रत्येक परिवर्तन के बहुत सारे प्रभाव हुएं जो निम्नलिखित हैं :-

(1) शीतयुद्ध की समाप्ति

- समाजवादी व्यवस्था और पूँजीवादी व्यवस्था में कौन सा श्रेष्ठ है ? यह विचारधारात्मक विवाद समाप्त हो गया।
- हथियारों की प्रतिस्पर्धा में कमी आयी या लगभग समाप्त हो गई।
- सैनिक गुटों का अंत होने लगा।

(2) वैश्विक राजनीती में शक्ति संबंध में परिवर्तन

- वैश्विक शक्ति संतुलन में परिवर्तन हुआ।
- एकध्रुवीय विश्व का निर्माण हुआ।
- अमेरिका अकेला महाशक्ति बन गया।
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रभुत्वशाली अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित हो गई।
- विश्व बैंक एवं अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) जैसी अंतराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएं विभिन्न देशों की सलाहकार बन गई।
- राजनीतिक रूप से उदारवादी लोकतंत्र राजनीतिक जीवन को सूत्रबद्ध करने की सर्वश्रेष्ठ धारणा के रूप में उभरा।
- पूँजीवाद का विस्तार हुआ और समाजवादी विचारधारा पर प्रश्न चिन्ह लग गया।

by :- M H RABBANI

सोवियत संघ के विघटन का परिणाम

- शीतयुद्ध की समाप्ति
- हथियारो की प्रतिस्पर्धा पर रोक
- सैनिक गुट कुछ हद तक अप्रसंगिक
- साम्यवादी विचारधारा पर प्रश्न चिह्न
- पूँजीवादी विचारधारा का प्रसार
- एक ध्रुवीय विश्व का उदय
- अमेरिका के वर्चस्व में वृद्धि
- वैश्विक सुक्ति संतुलन मे परिवर्तन
- नए देशो का उदय
- NATO का विस्तार
- वरसा की समाप्ति
- सोवियत संघ से अलग हुए देशों में राजनीतिक एवं आर्थिक सुधारों के लिए जनसंघर्ष,अलगाववादी आंदोलन
- मध्य एशिया संघर्ष का केंद्र बन गया
- सोवियत गणराज्य में राजनीतिक असंतोष एवं बिखराव
- सोवियत संघ में शामिल बालटिक और पूर्वी यूरोप के देश यूरोपीय संघ में शामिल

सोवियत संघ के विघटन का अंतराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- साम्यवादी अर्थव्यवस्था की तुलना मे पूँजीवादी 'अर्थव्यवस्था का दुनिया मे वर्चस्व कायम हो गया।
- वैश्विक स्तर पर साम्यवादी विचारधारा पर प्रश्न चिह्न लग गया जबकि पूँजीवादी विचारधारा' का प्रसार हुआ।
- अंतराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका सबसे बडी ताकत बनकर उभरा और दुनिया के विभिन्न देश अमेरिकी की अर्थव्यवस्था की ओर आकर्षित हुए।
- विश्व बैंक एवं अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी वैश्विक वित्तीय संस्थाएं विभिन्न देशों की सलाहकार बन गई। इनके द्वारा बिभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था को पूँजीवादी अर्थव्यवस्था मे तबदील (परिवर्तन) करने के लिए कर्ज दिया गया।
- सान्यवादी देशो ने पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण किया।
- निष्कर्ष :- वस्तुतः सोवियत संघ के विघटन से वैश्विक स्तर पर व्यापक परिवर्तन हुएं।

सोवियत संघ के विघटन का भारत पर प्रभाव

- भारत ने अंतराष्ट्रीय स्तर पर सोवियत संघ जैसी एक वैश्विक शक्ति का समर्थन खो दिया।
- भारत को एकू ध्रुवीय विश्व में अमेरिका साथ संबंध बेहतर करने का प्रयास करना पड़ा।
- भारत को अमेरिका एवं सोवियत संघ के उत्तराधिक रूस दोनो के साथ संतुलन साधने का प्रयास करना पड़ा।
- एक ध्रुवीय विश्व में उत्पन्न चुनौतियो का सामना करने के लिए भारत को अपनी सैन्य शक्ति मजबूत करने पर ध्यान देना पड़ा।

by :- M H RABBANI

सोवियत संघ के विघटन न होने की स्थिति में वैश्विक राजनीती

👉 यदि सोवियत संघ का विघटन न होता और विश्व द्विध्रुवीय बना रहता तो ऐसी परिस्थिति में वैश्विक राजनीती पर निम्न प्रभाव पड़ता :-

- शीतयुद्ध के दौरान जो टकराव था वो समाप्त न होता तथा अमेरिका दुनिया का एकमात्र सुपरपावर न बन पाता।
- सोवियत संघ में शामिल गणराज्य स्वतंत्र न हो पातें।
- सोवियत संघ एवं अमेरिका के बीच हथियारों की प्रतिस्पर्धा जारी रहती।
- सम्भवतः दोनों वैश्विक शक्तियों के बीच तनाव इतना बढ़ जाता कि तृतीय विश्वयुद्ध हो जाता।

लियोनिड ब्रेझनेव और सोवियत विघटन

- **ब्रेझनेव के शासन काल मे** सन् 1979 मे सोवियत संघ ने **अफगानिस्तान में सैनिक हस्ताक्षेप** करके अपने आप को सकट मे डाल दिया।
- ऐसा करने से सोवियत अर्थव्यवस्था पर दवाब बढ़ा, देश के भीतर उपभोक्ता साम्रगी और खाद्य - उत्पादन लगातार कम होता गया। अतः सोवियत सघ को बाहर से खाद्यान्न आयात करना पड़ा।
- **1979-1989** वर्षो तक लगातार प्रयास करने के बावजूद भी सोवियत संघ अफगानिस्तान को अपने नियंत्रण में नहीं रख सका अतः मजबुर होकर मिखाइल गोर्बाचेव को अफगानिस्तान से अपनी सेना वापस बुलानी पड़ी।
- **दस वर्षो तक युद्ध** मे शामिल होने से सोवियत संघ के भीतर जन आक्रोश को बढ़ावा मिला जिसके कारण सोवियत संघ का विघटन हो गया।

सोवियत संघ का अंत समाजवाद या साम्यवाद का अंत ?

- सोवियत संघ का अंत समाजवादी व्यवस्था और साम्यवादी विचारधारा का अंत नहीं है।
- सोवियत संघ के विघटन के साथ दुनिया से साम्यवादी विचारधारा का अंत नही हुआ।
- **एक विचारधारा के रूप मे यह आज भी अस्तित्व में है।**
- बदले हुए वैश्विक परिवेश एवं परिस्थितियों के अनुसार दुनिया के विभिन्न देशो ने इस विचारधारा को अपनी जरूरतो के अनुसार थोड़े बहुत बदलाव के साथ अपनाया है।

स्वतंत्र राष्ट्रों का राष्ट्रकुल

- CIS - Commonwealth Nation of Independent states
- दिसंबर 1991 में बेलरूस में इसकी स्थापना कि गई।
- इसे रुसी राष्ट्रमंडल भी कहते हैं।
- 19 मई,2018 को यूक्रेन ने रूस के साथ डॉन बॉस्को और क्रीमिया के प्रश्न पर संघर्ष के परिणामस्वरूप राष्ट्रमंडल में भाग लेना बंद कर दिया है और अपने सारे संबंध राष्ट्रमंडल से तोड़ दिये हैं।
- **निर्माण का आधार :- सोवियत संघ के विघटन से स्वतंत्र हुए देशों ने एक समान संप्रभुता के आधार पर इसका गठन किया।**

by :- M H RABBANI

कुल सदस्य 12

- रूस
- बेलरूस
- यूक्रेन
- माल्दोवा
- आर्मीनिया
- अजरबैजान
- जॉर्जिया
- तज़ाकिस्तान
- किर्गीस्तान
- तुर्कमेनिस्तान
- उज़्बेकिस्तान
- कज़ाकिस्तान

सोवियत अर्थव्यस्था के गतिरुद्ध होने के कारण

- संसाधनों का दरूपयोग परमाणु हथियार और सैन्य समाग्री पर।
- पूर्वी यूरोप के देशों की आर्थिक मदद।
- बिभिन्न युद्धों पर खर्च।

शॉक थेरेपी

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

👉 **शाब्दिक अर्थ :-** आघात पहुंचाकर ऊपचार करना
👉 **संक्रमण मॉडल :-** साम्यवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण का मॉडल
👉 **क्षेत्र :-** रूस, मध्य एशियाई गणराज्य, पूर्वी यूरोप
👉 **समय :-** 1990 से
👉 **दिशा निर्देश :-** अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं के दिशा निर्देश में

- WB - World Bank (विश्व बैंक)
- IMF - International Monetary Fund (अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष)

👉 **दूसरी दुनिया के देशों में इसकी गति एवं घंटा अलग -अलग रही लेकिन लगभग इसकी दिशा और चरित्र एक जैसी रही।**

शॉक थेरेपी की विशेषताएं

(1) मिल्कयत का सबसे प्रभावी रूप निजी स्वामित्व।
(2) राज्य की सम्पदा का निजीजरण।
(3) सामूहिक फर्म की जगह निजी फर्म अथार्त पूँजीवादी पद्धति से कृषि।
(4) मुक्त व्यापार, पश्चिमी देशों की अर्थव्यवस्था से जुड़ाव।
(5) मुद्राओं की आपसी परिवर्तनीयता, वित्तीय खुलापन।
(6) पूँजीवाद के अतिरिक्त किसी अन्य वैकल्पिक व्यवस्था को न अपनाना।

by :- M H RABBANI

शॉक थेरेपी के परिणाम

(a) अर्थव्यवस्था तहस-नहस या बर्बाद

(b) राज्य नियंत्रित सम्पूर्ण औद्योगिक ढाँचा नष्ट (c) क्षेत्र की जनता को बर्बादी की मार झेलनी पड़ी

(d) इतिहास की सबसे बडी गराज सैल या महाबिक्री

(e) रूसी मुद्रा रूबल के मूल्य मे गिरावट तथा मुद्रास्फीति

(f) गरीब जनता पर प्रतिकुल प्रभाव

- सामूहिक खेती प्रणाली समाप्त होने से लोगो के पास अब खाद्यान सुरक्षा न रही, अतः खाद्यान संकट ।
- सरकार द्वारा दी जाने वाली निशुल्क आधारभूत सुविधाओं के खत्म होने से गरीब जनता का जीवननिर्वाह कष्टदायक हो गया।
- समाजकल्याण की पुरानी व्यवस्था को शॉक थेरेपी के माध्यम से क्रमिक रूप से नष्ट कर दिया गया
- सरकारी रियायतों की समाप्ति के कारण मध्यवर्ग ग़रीबी का शिकार हो गया।

(g) आर्थिक विषमता में वृद्धि

- उत्पादन के साधनों पर निजी कम्पनीयों एवं पूंजीपतियों का नियंत्रण होने से आर्थिक विषमता में वृद्धि हुई।

(h) कालाबाजारी एवं माफिया वर्ग (जरायमपेशा) का उदय

- अधिकांश आर्थिक गतिविधियाँ इनके नियंत्रण में आ गई।
- भ्रष्टाचार में वृद्धि हुई।

(i) बैंक दिवालिया हुए जैसे इंकाम बैंक

(j) सत्तावादी शाशन प्रणाली का विकास

- आर्थिक बदलावों को प्राथमिकता दी गई परन्तु लोकतान्त्रिक संस्थाओं के निर्माण को नहीं।
- अधिकांश देशों के संविधान जल्दीबाज़ी में बनाए गए।
- राष्ट्रपति को कार्यपालिका का प्रमुख और कमजोर संसद बनाने से इन देशों में सत्तावादी राष्ट्रपतिय शासन का विकास हुआ।

निष्कर्ष :-

👉 शॉक थेरेपी पूर्णतः विफल रही।
👉 सम्पूर्ण औद्योगिक ढांचा बर्बाद।
👉 अर्थव्यस्था बर्बाद
👉 इन सबकी मार जनता को झेलनी पड़ी।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

शॉक थेरेपी की समीक्षा

- शॉक थेरेपी को साम्यवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण का बेहतर विकल्प नहीं माना जा सकता' क्योंकि इसके परिणाम सोवियत संघ के लिए नुकसानदायक रहे।
- किसी भी राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था के भीतर तुरन्त परिवर्तन की अपेक्षा धीरे-धीरे परिवर्तन को लागू करना चाहिए।
- लेकिन शॉक थेरेपी के माध्यम से अचानक एक साम्यवादी व्यवस्था को पूँजीवादी व्यवस्था मे बदलने प्रयास किया गया।
- इसके कारण सम्पूर्ण औद्योगिक ढाँचा तहस-नहस हो गया और सुधार की जगह सोवियत संघ का विघटन हो गया।

by :- M H RABBANI

इतिहास की सबसे बड़ी गराज सेल

- सरकारी ससाधनो एवं उद्योगो की नीलामी की प्रक्रिया को इतिहास की सबसे बड़ी गराज सेल या महाविक्री कहा गया।
- लगगण 90% उद्योगो को निजी हाथो या कम्पनियो को बेचा गया।
- इस महाविक्री मे भाग लेने के लिए नागरिको को अधिकार पत्र जारी किए गए लेकिन धन के आभाव में नागरिको ने अपने अधिकार पत्र कालाबजारियों के हांथों बेच दिया।
- उद्योगो की कीमत कम से कम आंकी गई और औने पौने दामों में बेच दिया गया। इसलिए इस महाविक्री को इतिहास का सबसे बड़ा गराज सेल कहा गया।
- औद्योगिक ढाँचे का यह पूर्ननिर्माण सरकार द्वारा निर्देशित औद्योगिक नीति की बजाए बाजार की ताकतें कर रही थी। इसलिए यह नीति नुकसानदायक रही।

संघर्ष एवं तनाव के क्षेत्र

👉 पूर्व सोवियत संघ के अधिकांश गणराज्य की आशंका वाले क्षेत्र में आते हैं।

👉 इन देशों में आंतरिक संघर्ष जैसे गृहयुद्ध या अलगाववादी आंदोलन तो है ही, साथ ही साथ बाहरी ताकतों की दखलन्दाजी (हस्तक्षेप) भी बढ़ा है।

👉 प्रमुख संघर्ष वाले क्षेत्र इस प्रकार हैं :-

(1) चेचन्या और दागिस्तान में संघर्ष

- यहाँ हिंसक अलगाववादी आंदोलन चला।
- सोवियत संघ द्वारा चेचन्य विद्रोहियों को नियंत्रित करने के लिए सैन्य बम्बारी की गई।
- इससे व्यापक स्तर पर मनवाधिकारों का उलंघन हुआ।

(2) बाल्कन क्षेत्र में संघर्ष

- **युगोस्लाविया** में जातीय संघर्ष ने गृहयुद्ध का रूप ले लिया।
- NATO का हस्तक्षेप, युगोस्लाविया पर बम्बारी।
- 1991 में युगोस्लाविया का कई प्रांतों में विभाजन हो गया।
- इसमें शामिल **स्लोवेनिया, क्रॉएशिया, बोसनिया-हरजेगोबीना** ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

(3) बालटिक क्षेत्र में संघर्ष

- **लिथुआनिया** में सबसे पहले 1988 में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष शुरू हुआ और अंततः 1990 में लिथुआनिया ने अपने आप को स्वतंत्र घोषित कर दिया।
- इसे देखकर लताविया और एस्टोनिया ने भी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
- लिथुआनिया, लताविया और एस्टोनिया ने 1991 में UNO की सदस्यता ग्रहण कर ली और 2004 में ये NATO के सदस्य भी बन गयें

(4) मध्य एशिया में संघर्ष

👉 **तज़ाकिस्तान**

- 1991 से लेकर 2001,10 वर्षो तक गृहयुद्ध।
- संम्प्रदायिक संघर्ष भी चल रहे हैं।

👉 **अजरबैजान**

- इसका एक प्रान्त नगराकरोबाख है जहाँ अलगाववादी आंदोलन चल रहे हैं।
- यहाँ के कुछ स्थानीय अर्मेनियाई, अजरबैजान से अलग होकर अर्मेनिया में शामिल होना चाहते हैं

👉 **जॉर्जिया, यूक्रेन, करिगीझस्तान**

- गृहयुद्ध
- मौजूदा शासन को उखाड़ फेकने के लिए आंदोलन

by :- M H RABBANI

(5) चेकोस्लोवाकिया

- पूर्वी यूरोप में चेकोस्लोवाकिया **शांति पूर्वक दो भागो में बट गया।**
- इससे चेक गणराज्य और स्लोवाकिया नमक दो देश बने।

मध्य एशिया में संघर्ष के कारण

(1) पेट्रोलियम संसाधनो का भण्डार

- मध्य एशियाई गणराज्यो मे हाइड्रोकार्बन (पेट्रोलियम) संसाधनो का विशाल भण्डार है।
- इसी कारण यह क्षेत्र बाहरी ताकतों एवं तेल कम्पनियों की आपसी प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा बन गया।

(2) अमेरिकी हस्ताक्षेप / हित

- 11 सितम्बर 2001 की घटना के बाद अमेरिका ने इन क्षेत्रों मे अपने सैन्य ठिकाने बनाए।
- इन क्षेत्रों का प्रयोग अफगानिस्तान एवं ईराक युद्ध मे किया।
- अमेरिका इन क्षेत्रो मे अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता है।

(3) रूस का हित

- रूस इन राज्यो को अपना निकटवर्ती विदेश मानता है।
- उसका मानना है कि इन क्षेत्रों को रूस के प्रभाव मे रहना चाहिए।

(4) चीन का हित

- खनिज तेल जैसे संसाधनो की मौजूदगी के कारण चीन के हित भी इस क्षेत्र से जुड़े हैं।
- चीन सीमावर्ती क्षेत्रो में अपने व्यापार का प्रसार कर रहा है

(5) नदी जल के बाँटबारे को लेकर विवाद

(6) गृहयुद्ध एवं अलगाववादी आंदोलन

by :- M H RABBANI

निष्कर्ष :-

👉 वस्तुतः गृहयुद्ध, अलगाववादी आंदोलन और नदी जल के बटवारे को लेकर इन क्षेत्रों में संघर्ष होते रहता है।

👉 अमेरिका, रूस, और चीन जैसे वैश्विक शक्तियों के हस्तक्षेप ने संघर्ष की संभावना को और बढ़ा दिया है।

सोवित संघ का एक महाशक्ति बनना

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् सोवियत संघ को महाशक्ति बनने मे निम्नलिखित कारक सहायक थें :-

(a) पूर्वी यूरोप के देशो पर सोवियत नियंत्रण

- द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान पूर्वी यूरोप के बहुत से देशो को सोवियत संघ फासीवाद के चंगुल से मुक्त कराया था।
- अतः द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद ये सारे यूरोपीय देश सोवियत संघ के प्रभाव मे आ गए।

(b) सोवियत संघ के प्रभाव में आए देशों की व्यवस्था

- युद्ध के बाद USSR से प्रभावित समस्त यूरोपीय देशों ने अपनी राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था को सोवियत संघ के अनुरूप बना लिया।
- इससे सोवियत संघ को और मजबूती प्राप्त हुई।

(c) संचार तंत्र

- सोवियत संघ के पास सूचना एवं संचार तंत्र का एक जटिल ताना बाना था।
- वैज्ञानिक क्षेत्र मे वह तत्कालिन सभी देशो से आगे था।
- चंद्रमा पर पहला अंतरिक्ष यात्री भेजने मे उसे सफलता मिली थी।
- समरिक हथियारों के उत्पादन मे भी वह सबसे आगे था।

(d) परिवहन क्षेत्र में सुधार

- परिवहन के साधनों में हुए सुधार से दूरदराज के क्षेत्र भी राजधानी मास्को से जुड़ गयें।
- इससे आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में काफ़ी परिवर्तन आया।

(e) उद्योग, व्यवसाय तथा भूमि प्रणाली में सुधार

- विशाल खनिज पदार्थ तथा ऊर्जा संसाधनों के कारण तीव्र विकास हुआ।
- घरेलू उपभोक्ता उद्योग उन्नत अवस्था में था।
- सभी नागरिकों को न्यूनतम जीवन स्तर की गारंटी थी, बेरोजगारी नहीं थी।
- भूमि और उत्पादन की परिम्पतियों पर राज्य का स्वामित्व था।

भारत सोवियत संघ संबंध (शीतयुद्ध काल)

(1) आर्थिक संबंध

- सोवियत संघ ने भारत के सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियो (भिलाई, बोकारो, विशाखापतनम इस्पात कारखाना, BHEL) को तब आर्थिक एवं तकनीकी सहायता दी जब कोई सहायता के लिए तैयार नहीं था।
- विदेशी के मुद्रा अभाव मे सोवियत संघ ने रूपए के माध्यम से हमसे व्यापार जारी रखा।

(2) राजनीतिक संबंध

- सोवियत संघ ने कश्मीर मुद्दे पर UNO में भारत का समर्थन किया।
- बंगलादेश संकट के समय 1971 में सोवियत संघ ने हमारी मदद की है।

(3) सैन्य संबंध

- सोवियत संघ ने हथियारों एवं सैन्य समाग्री का भारत को आपूर्ति किया है।
- सोवियत संघ ने भारत के साथ संयुक्त रूप से सैन्य उपकरण तैयार किया।

(4) सांस्कृतिक संबंध

- हिंदी फ़िल्में और भारतीय संस्कृति सोवियत संघ में बहुत लोकप्रिय रहें।
- कई सारे भारतीय लेखकों और कलाकारों ने USSR की यात्रा की।

🔴 **निष्कर्ष :-**

👉 वस्तुतः शीतयुद्ध काल में भी USSR और भारत के संबंध बेहतर और बहुअयामी थें।

👉 इसी कारण कुछ आलोचक मानते थें कि भारत भी USSR के गुट में शामिल है और उसकी गुट निरपेक्षता की नीति की कोई प्रासंगिकता नहीं।

पूर्व साम्यवादी देश और भारत

👉 साम्यवादी रह चुके लगभग सभी देशों के साथ वर्तमान में अच्छे संबंध हैं।

👉 कज़ाकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान के साथ ऊर्जा समझौता।

👉 पूर्व सम्यवादी देशों में सबसे बेहतर संबंध रूस के साथ।

भारत - रूस (उत्तर साम्यवादी) संबंध

👉 भारत रूस संबंध भारतीय विदेश नीति का महत्वपूर्ण पहलू है। रूस हमारा परम्परागत मित्र है।

(1) भारत रूस संबंधों का आधार

- आपसी विश्वास और समझौते का इतिहास
- दोनों देशों की जनता की अपेक्षा

(2) भारत रूस सहमति के बिंदु

- बहुध्रुवीय विश्व का निर्माण
- अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर कई शक्तियाँ मौजूद हो
- अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षो का बातचीत से समाधान
- प्रत्येक देश की स्वतंत्र विदेश नीति
- क्षेत्रीयता को बढ़ावा
- सुरक्षा की सामूहिक जिम्मेदारी होनी चाहिए
- UNO जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठन को मजबूत, लोकतान्त्रिक और शक्ति सम्पन्न बनाया जाए।

by :- M H RABBANI

(3) संबंध से भारत को लाभ

- कश्मीर मुद्दे पर रूस का समर्थन
- ऊर्जा आपूर्ति एवं परमाण्विक योजना में रूस ने सहायता की है।
- वैज्ञानिक प्रयोजनाओं में साझेदार
- हथियारों और सैन्य सामग्री की प्राप्ति जैसे - क्रायोजेनिक रॉकेट
- आतंकवाद से संबंधित सूचनाओं का आदान प्रदान
- पश्चिम एशिया में पहुँच बनाने तथा चीन के साथ अपने संबंध में संतुलन लाने में सहायक

(4) संबंध से रूस को लाभ

- रुसी हथियारों का दूसरा बड़ा खरीदार भारत है।
- तेल का भी प्रमुख आयतक देश है भारत।
- आतंकवाद के मुद्दे पर सहयोग
- चीन को संतुलित करने में सहयोग

सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत की विदेश नीति

- कुछ लोगों का मानना है कि सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत को अपनी विदेश नीति बदल लेनी चाहिए तथा रूस जैसे परम्परागत मित्र कि जगह अमेरिका से दोस्ती करने पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।
- अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में नहीं कोई स्थायी दुश्मन और न ही कोई स्थायी मित्र होता है। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में बदलाव के अनुसार प्रत्येक देश को अपनी विदेश नीति में भी बदलाव लाना चाहिए। भारत को भी बदले हुए अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन में अपनी परम्परागत विदेश नीति में थोड़ा बहुत बदलाव लाना चाहिए।
- यह बात सत्य है कि रूस हमारा सोवियत संघ के विघटन से लेकर वर्तमान समय तक एक अच्छा मित्र रहा है जिसने विभिन्न मामलों में अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर भारत के पक्ष का समर्थन किया है और संकट के समय हमारी मदद की है।
- वर्तमान परिदृश्य में अमेरिका दुनिया में सर्वशक्तिमान है इसलिए भारत को भी अमेरिका के साथ संबंध बेहतर करने का प्रयास करना चाहिए, ताकि हम अमेरिकी वर्चस्व का लाभ उठा सकें। परन्तु इसका मतलब यह बिलकुल भी नहीं है कि हमें रूस से अपने संबंध खराब कर लेने चाहिए।
- वस्तुतः हमें एक संतुलित विदेश नीति का अनुसरण करना चाहिए जिससे इन दोनों महाशक्तियों के साथ हमारा मित्रतापूर्ण संबंध रहे और इन बेहतर संबंधों का लाभ उठा कर हम स्वयं को आर्थिक एवं समृक दृष्टि से मजबूत कर सके।

भारत का रूस की तुलना में अमेरिका से बेहतर संबंध की रणनीति

👉 वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में निः संदेह अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है लेकिन फिर भी भारत को रूस जैसे परम्परागत मित्र को छोड़कर अमेरिका का हाँथ नही थामना चाहिए। इसे निम्न तथ्यों के आधार पर समझा सकता है :-

- अमेरिका ने भारत की आजादी के लिए ब्रिटेन पर दबाव डाला था लेकिन आजादी के बाद भारत की गुटनिरपेक्ष नीति से वह नाराज हो गया और वह भारत के दुश्मन पाकिस्तान से हाँथ मिलाकर उसे सैन्य मदद प्रदान करने लगा।
- अमृरीका भारत को शक्तिशाली होते हुए भी नहीं देखना चाहता है। भारत का परमाणु परीक्षण का उसने विरोध किया और भारत को "परमाणु अप्रसार संधि (NPT)" एवं "व्यापक परमाणु परिक्षण प्रतिबंध संधि (CTBT)" पर हस्ताक्षर करने के लिए दबाव डालता रहा। भारत ने हमेशा अमेरिका की इस दोहरी परमाणु नीति का विरोध किया है।
- अमेरिका के आतंकवाद संबंधित नीति भी दोहरी है। पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवादी घटनाओं पर वो भारत को संयम बरतने को कहता है लेकिन जब उनके देश पर हमला हुआ तो उसने तुरंत अफ़ग़ानिस्तान में "अलकायदा " के ठिकानों पर हमला कर दिया।
- अमेरिका हमेशा से पाकिस्तान की सैन्य मदद करता आया है इसीलिए भारत के संबंध अमेरिका के साथ उतने अच्छे नहीं हो सकें जितने कि पाकिस्तान के रहें।
- वर्तमान में अफ़ग़ानिस्तान पर तालिबान के नियंत्रण कर लेने और पाकिस्तान द्वारा तुरंत तालिबानी सरकार को मान्यता देने के वजह से तथा पाकिस्तान और चीन के संबंधो में मजबूती के कारण, पाकिस्तान - अमेरिका संबंधों में दरार उतपन्न हुआ है जिसका लाभ उठा कर हमें अमेरिका के साथ अपने संबंधों को मजबूत करना चाहिए।

by :- M H RABBANI

रूस - सोवियत संघ का उत्तराधिकारी

- रूस को सुरक्षा परिषद में सोवियत संघ कि सीट मिली।
- सोवियत संघ के द्वारा किए गए अन्तर्राष्ट्रीय करार एवं सन्धियों को निभाने की जिम्मेदारी रूस की है।
- पूर्ववर्ती सोवियत गणराज्य में से रूस को परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र का दर्जा मिला

व्यापक परमाणु परिक्षण प्रतिबंध संधि (CTBT)

- **CTBT - Comprhensive Test Ban Treaty**
- CTBT एक बहुपक्षीय संधि है जो सैन्य और असैन्य उद्देश्यों से संबंधित किए गए **सभी परमाणु विस्फोटों पर प्रतिबंध** लगती है।
- इसे 1**0 सितम्बर 1996 संयुक्त राष्ट्र महासभा** द्वारा लाया गया था, लेकिन अभि तक इसको लागु किया नहीं जा सका। इसका कारण यह है कि इसे अभि तक **8 देशों** (चीन, भारत, पाकिस्तान, ईरान, इजराइल, उत्तरी कोरिया, मिस्त्र / Egypt, usa) ने सहमति नहीं दी है।

👉 **उद्देश्य :-**

- परमाणु हथियारों के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना।
- लागु होने के बाद हस्ताक्षरित राष्ट्रों के लिए बाध्यकारी।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

👉 **भारत के असहमति के कारण :-**

- पूर्ण परमाणु नि:शस्त्रीकरण - भारत का माना है कि एक निश्चित समय में सभी राष्ट्रीरों के लिए पूर्ण परमाणु नि: शस्त्रीकरण लागु होना चाहिए।
- भेदभावपूर्ण संधि
- भारत की सुरक्षा को खतरा - पाकिस्तान एवं चीन ने भी इसपर हस्ताक्षर नहीं किया है।

MIDDLE EAST
मध्य पूर्व

- ईरान
- ईराक
- सीरिया
- जॉडर्न
- लेबनान
- इजराइल
- फिलिस्तीन
- तुर्की
- साईप्रस
- मिस्त्र
- सऊदी अरब
- यमन
- ओमान
- कुवैत
- बहरीन
- कतर
- UAE

by :- M H RABBANI

west asia +Egypt= Middle East

अफ़ग़ानिस्तान

2/3 पहाड़ी क्षेत्र

ब्रिटिश भारत और अफ़ग़ान के बीच सीमा रेखा

1893
डुरंड रेखा

by :- M H RABBANI

👉 संस्थापक - अहमद शाह अबदाली
👉 भौगोलिक स्थिति जटिल - सम्राज्यों की कब्रगाह
👉 पश्चिम, मध्य और दक्षिण एशिया की सीमा पर अवस्थित
👉 चारो तरफ से स्थलीय सीमा से घिरा
👉 सिर्फ 12% कृषि योग्य भूमि
👉 **प्रमुख जनजाति - पश्तून, ताजिक, उज्बेक, हज़ारा**

आधुनिक अफ़ग़ानिस्तान में तीन प्रमुख युद्ध

(1) सोवियत आक्रमण (1979-1989)
(2) अफगानिस्तानी गृहयुद्ध (1989-1996)
(3) अफग़ान युद्ध / अमेरिकी हस्तक्षेप (2001-2021)

अफ़ग़ानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप / आक्रमण

पृष्ठभूमि

- **1973** में अफ़ग़ानिस्तान में **राजतंत्र समाप्त** हुआ तथा **मुहम्मद दाऊद** खान प्रधानमंत्री बनें।
- दाऊद खान ने आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण का प्रयास किया।
- **1978 में मार्क्सवादी नेता मोहम्मद नूर तराकी** के द्वारा दाऊद खान की सरकार का तखतापलट कर दिया गया।
- इसप्रकार सोवियत समर्थन वाली वामपंथी पार्टी PDPA (People Democratic Party of Afghanistan) के नियंत्रण में सत्ता आ गई।
- नई सरकार का गठन हुआ जिसने निम्न सुधार किये :-
  - 👉 भूमि सुधार
  - 👉 समाजिक सुधार
- इसका विरोध मुस्लिम समुदाय एवं खाश कर वामपंथ विरोधी समुदाय द्वारा किया गया।
- लोगों ने विरोध में **USA के समर्थन से जिहाद** शरू किया।
- जिहाद में शामिल लड़ाकों को मुजाहेद्दीन कहा गया जो ग्रामीण और शहरी क्षेत्र दोनों से थें।

🔴 **परिणाम :-**

👉 PDPA सरकार मुजाहेद्दीन (गुड़िल्ला युद्ध नीति) से लड़ने में असमर्थ।
👉 USSR को लगा कि वह अफ़ग़ानिस्तान पर से अपना प्रभाव या नियंत्रण खो देगा।
👉 अतः **24 दिसंबर 1979** को सोवियत संघ ने अफ़ग़ानिस्तान पर चढ़ाई कर दी।

सोवियत अतिक्रमण / नियंत्रण

- लगभग 1 लाख सोवियत सैनिक अफ़ग़ानिस्तान में प्रवेश कर गए।
- तुरंत ही सभी प्रमुख नगर, शहर सोवियत नियंत्रण में आ गए।
- मुजाहेदिनों ने गाँव और पहाड़ियों में छिप कर गुड़िल्ला युद्ध को जारी रखा।
- **मुजाहेद्दीन को समर्थन**
  - 👉 संयुक्त राज्य अमेरिका
  - 👉 सऊदी अरब
  - 👉 पाकिस्तान (ISI)
  - 👉 चीन
- 1980 के दशक में नए - नए **वॉर ग्रुप्स** का उदभव हुआ।
  - 👉 Taliban
  - 👉 Al - Qaida
- इन वॉर ग्रुप्स को USA हथियार उपलब्ध करा रहा था। इसप्रकार संघर्ष लम्बा चलता गया।

by :- M H RABBANI

सोवियत सेना कि वापसी

- **1985 में मिखाईल गोर्बाचेव** ने सोवियत प्रणाली में सुधारों की शरुवात की।
- घोषणा किया गया कि क्रमिक रूप से अफ़ग़ानिस्तान से सेना वापिस बुलाई जाएगी।
- **1986** में सोवियत सम्रथित **Md Nazibullah** सत्ता में आए।
- **1989** में पूरी तरह **सोवियत सेना की अफ़ग़ानिस्तान से वापसी** हो गई।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

अफ़ग़ान गृहयुद्ध

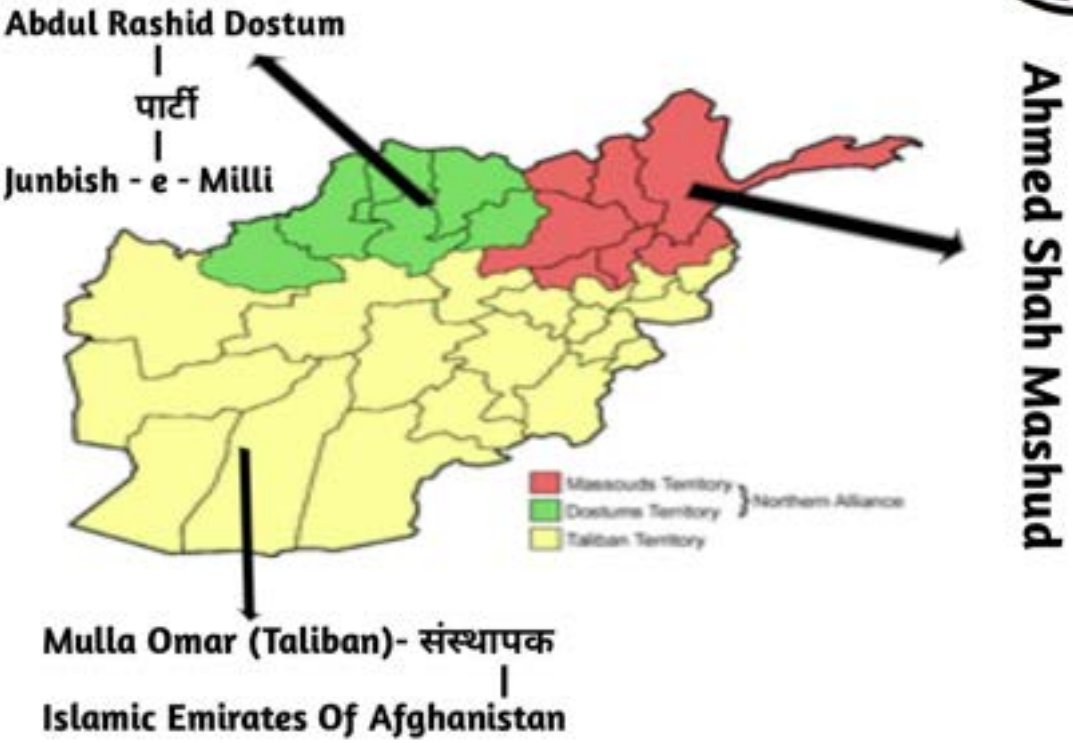

Masood + Dostum + USA = Northern Alliance

पृष्ठभूमि

- 1991 में सोवियत संघ का विघटन हो गया।
- अगले ही वर्ष सोवियत समर्थित सरकार **Md Nazibullah** की सरकार गिर गई।
- मुजाहेद्दीन के हाँथ में सत्ता आ गयी और 1992 में **Burhanuddin Rabbani** राष्ट्रपति बनें।

सत्ता के लिए संघर्ष

- मुजाहेद्दीन के विभिन्न समूहों के बीच सत्ता के लिए संघर्ष शरू हुआ।
- **तालिबान सबसे शक्तिशाली लड़ाकों के समूह** के रूप में उभरा।
- तालिबान ने कंधार को अपना ठिकाना बनाया और अंततः 1996 तक राजधानी काबूल पर भी नियंत्रण कर लिया।

तालिबानी शासन (1996 - 2001)

- अफ़ग़ानिस्तान को इस्लामिक राष्ट्र घोषित किया।
- **प्रमुख** - Mulla Mohammad Omar
- पाकिस्तानी सेना द्वारा समर्थन
- **शरिया कानू** न (हदीस + कुरआन) लागु।
- मानवाधिकार एवं महिलाओं के अधिकारों का बड़े स्तर पर हनन।
- **Al - Qaida नमक आतंकवादी संगठन को पनाह।**

by :- M H RABBANI

Al - Qaeda

- प्रमुख नेता
  - 👉 Osama Bin Laden
  - 👉 Ayman Ali Zawahari
- प्रमुख गतिविधि
  - 👉 केन्या, तंजानिया में अमेरिकी दूतावास पर बमबारी,1998
  - 👉 9/11 आतंकी हमला

अफ़ग़ान युद्ध (2001- 2021)

पृष्ठभूमि

- 11सितंबर 2001(9/11 की घटना)
- अरब के 19 अपहरणकर्ताओं ने चार अमेरिकी यात्री विमानों पर नियंत्रण कर लिया।
- अमेरिका के प्रमुख स्थलों पर इन विमानों से आक्रमण

परिणाम

by :- M H RABBANI

- अमेरिका ने आतंकवाद को विश्वव्यापी घटना माना।
- अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति जॉर्ज डब्लू बुश
- **आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध - ऑपरेशन एनड्यूरिंग फ्रिडम (2001-2014)**
- **7 अक्टूबर 2001** को अमेरिका द्वारा अफ़ग़ानिस्तान पर आक्रमण
- **संयुक्त अभियान**
  - 👉 USA (नेतृत्वकर्ता)
  - 👉 UK
  - 👉 कनाडा
  - 👉 NATO के सहयोगी देश
- **दिसंबर 2001** तक तालिबान सरकार गिर गई। अमेरिका का अफ़ग़ानिस्तान पर नियंत्रण हो गया।
- UN सुरक्षा परिषद ने **ISAF** (International Security Assistance Force) तैनात किया।
- अमेरिका के समर्थन से **Hamid karzai** अफ़ग़ानिस्तान के राष्ट्रपति बनें।
- संदिग्ध लोगों को गिरफ्तार कर ख़ुफ़िया जेलों में रखा गया। जैसे - ग्वान्तनामो बे

तालिबान के प्रभाव में पुनः वृद्धि

- तालिबानी लड़ाके ISAF के साथ लगातार गुड़िल्ला युद्ध नीति से लड़ते रहे।
- धीरे - धीरे तालिबान ने पुनः कई शहरों पर नियंत्रण कर लिया।
- अमेरिकी सेना द्वारा लादेन को मई 2011 में Abbotabad (Pakistan) तथा मुल्ला उमर को Jbale (Afghanistan) में मर दिया गया।

अमेरिकी सेना की वापसी

- **2014** में **Ashraf Ghani** अफ़ग़ानिस्तान के राष्ट्रपति बनें।
- अमेरिकी सेना को क्रमिक रूप से वापस बुलाया गया।
- 14000 अमेरिकी सेना और 17000 NATO सेना अफ़ग़ानिस्तान आर्मी को सहायता देने के लिए रह गए। **(ऑपरेशन रेजोल्यूट सपोर्ट,1 जनवरी 2015)**
- अफ़ग़ानिस्तान सेना और तालिबानी लड़ाको के बीच लगातार संघर्ष जारी रहा।
- तालिबान का अधिकांश क्षेत्रों पर नियंत्रण हो गया।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प का काल

- 2018 से अमेरिका ने तालिबान के साथ समझौता करने का प्रयास शरू किया।
- 2020 में दोनों के बीच **शांति स्थापना के लिए** एक **समझौता** हुआ जिसके अनुसार तय हुआ कि :-

(1) प्रभावशाली तरीके से अमेरिका अपनी सेना को वापस बुलाएगा।
(2) तालिबान अपनी जमीन का प्रयोग आतंकवाद के लिए नही होने देगा।
(3) तालिबान अफ़ग़ान सरकार के साथ सत्ता में साझेदारी के लिए बात करेगा।

वर्तमान स्थिति

by :- M H RABBANI

- जो बाइडेन अमेरिकी राष्ट्रपति बनें, अमेरिकी सेना कि वापसी।
- तालिबान का अफ़ग़ानिस्तान पर पूर्ण नियंत्रण।
- इस्लामिक अमीरात अफ़ग़ानिस्तान की स्थापना :-

👉 प्रमुख - maulvi Hibatullah Akundzada
👉 PM - Mulla Hasan Akund
👉 DPM - Maulvi Abdul Salam Hanfi & Mulla Abdul Ghani Bradar

प्रथम खाड़ी युद्ध

- मध्य पूर्व / पश्चिम एशिया / खाड़ी क्षेत्र
- प्रथम ईराकी युद्ध / खाड़ी युद्ध
- ईराकी सेना द्वारा 2 अगस्त 1990 को kuwait पर आक्रमण कर नियंत्रण कर लिया गया।

@vidyadrishti

पृष्ठभूमि

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

- 1979 में सद्दाम हुसैन ईराक के राष्ट्रपति बनें।
- 1980 -1988 तक ईरान - ईराक युद्ध।
- इस युद्ध के कारण ईराक पर बहुत कर्ज हो गया।
- अरब और कुवैत OPEC द्वारा निर्धारित कोटा से अधिक तेल का उत्पादन, कीमतों में गिरावट से ईराक को नुकसान।

अमेरिका का हस्तक्षेप

by :- M H RABBANI

👉 **ऑपरेशन डेजर्ट शिल्ड,** 7 August 1990

- USA द्वारा अपनी सेना को अरब में तैनात किया गया।
- ईराक ने UN सुरक्षा परिषद के आदेश को भी नहीं माना।

👉 **ऑपरेशन डेजर्ट स्टॉर्म,** 17 जनवरी 1991

- अमेरिका के नेतृत्व में एक नयी विश्व व्यस्था का निर्माण।
- नई विश्व व्यस्था
  - 34 देश शामिल
  - 6 लाख 60 हजार सैनिक
  - नेतृत्व, General Norman
- **कम्प्यूटर युद्ध :-** अमेरिका द्वारा स्मार्ट बमों का प्रयोग।
- **वीडियो गेम वॉर :-** युद्ध का टेलीवीज़न पर बढ़ा चढ़ा कर प्रसारण।

USA

George
W. H. Bush

Iraq

Saddam Hussain

- पराजित
- "सौ जंगों की एक जंग " - गलत साबित

परिणाम

- इराकी सेना की कुवैत से वापसी।
- UN के अनुसार ईराक अपने सामूहिक जनसंहार के हथियारों (WMD) को समाप्त करेगा।

दूसरा खाड़ी युद्ध

- **ऑपरेशन इराकी फ्रिडम,19 मार्च 2003 l**
- जॉर्ज डबल्यू बुश के नेतृत्व में अमेरिका द्वारा ईराक पर हमला। इसे ही दूसरा खाड़ी युद्ध कहा जाता है।

कोअँलिशन ऑफ़ विलिंग्स

- अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र संघ की अनुमति के बिना **"आकांक्षियों का महाजोट"** बनाया।
- 40 से ज्यादा देश शामिल।
- नेतृत्व अमेरिका द्वारा।

अमेरिका द्वारा बताया गया कारण

- इराक के पास सामूहिक जनसंहार(WMD) के हथियार हैं।
- सद्दाम हुसैन ने हजारों कुर्द लोगों की हत्या करवाई है।

मूल कारण

- सद्दाम हुसैन का तखता पलट करना।
- इराक में अपनी मनपसंद की सरकार बनवाना।
- इराक पर प्रभुत्व जमाना।
- इराक के तेल भंडारों पर नियंत्रण करना।

परिणाम

- इराक पराजित
- WMD के मौजूदगी का कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं।
- इराकी सैनिकों को अधिक नुकसान।
- लगभग 50 हजार इराकी नागरिक मारे गए।
- मनवाधिकारों का व्यापक स्तर पर उल्लंघन।

इराक पर अमेरिकी नियंत्रण के बाद

- अमेरिका द्वारा सद्दाम हुसैन को खोजने का अभियान चलाया गया।
- सद्दाम हुसैन की तीकरीत से गिरफ्तारी के बाद सजा-ए-मौत।
- अमेरिका सैनिकों का इराकी नागरिकों द्वारा विरोध किया जाने लगा।
- अमेरिका की इस कार्यवाही की पूरी दुनिया में आलोचना।
- ओबामा सरकार ने 2011 में इराक से USA सेना को वापस बुलाया।
- सिरिया में गृहयुद्ध के समय 2014 में दुबारा USA ने इराक में अपनी सेना तैनात की।
- 2017 में पूरी तरह से USA सेना की वापसी।

by :- M H RABBANI

निष्कर्ष

- इराक ओर अमेरिका अपना प्रभाव क़ायम नहीं रख सका।
- इराक में अमेरिका अपनी पसंद की सरकार भी नहीं बना सका।
- इराक पर नियंत्रण बनाए रखने ले लिए बहुत बड़ी संख्या में अमेरिकी सैनिकों को जान गवानी पड़ी।
- **वस्तुतः अमेरिका के लोए यह युद्ध सैन्य और राजनीतिक दोनों धरातल पर असफल सिद्ध हुआ।**

ऑपरेशन इनफाइनाईट रीच
20 अगस्त 1998

पृष्ठभूमि

- 7 अगस्त 1998 को **अलकायदा** द्वारा केन्या (नैरोबी) तथा तंजानिया (दर -ए -सलाम) में **अमेरिका के दूतावास पर बमबारी** की गयी।

अमेरिकी प्रतिक्रिया

- **सूडान और अफ़ग़ानिस्तान में अलकायदा के ठिकानों** पर क्रूज मिसाइलों द्वारा हमला किया गया।
- **"हरकत - उल - मुजाहेद्दीन"** तथा **"लशकर - ए - तैयबा"** के ठिकानों पर भी हमला किया गया।

नेतृत्व

- अमेरिका :- विलकिलिंटन
- अलकायदा :- ओसामा बीन लादेन

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

परिणाम

- अलकायदा के ठिकाने नष्ट परन्तु उसके प्रमुख नेता बच गए।
- Al - Shifa - Pharmaceutical Plant को अमेरिका द्वारा ध्वस्त कर दिया गया।

निष्कर्ष

- इस अभियान के लिए UN द्वारा अनुमति नहीं दी गई थी।
- अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का अमेरिका द्वारा उल्लंघन।
- अमेरिका द्वारा नागरिक ठिकानों पर हमला। अतः मानवाधिकारों का उल्लंघन।

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

👉 बोलशेविक कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक - लेनिन
👉 रूस के पहले चुने हुए राष्ट्रपति - बोरिस येल्तसिन
👉 सोवियत संघ के अंतिम राष्ट्रपति - मिखाइल गोर्बाचेव
👉 घटनाक्रम या कालक्रम :-
- रूस में समाजवादी क्रांति (1917)
- बर्लिन की दीवार का निर्माण (1961)
- सोवियत संघ का अफ़ग़ानिस्तान में हस्तक्षेप (1979)
- बर्लिन की दीवार को तोडना (1989)
- सोवियत संघ का विघटन (1991)

👉 घटनाक्रम या कालक्रम :-
- रुसी क्रांति
- अफ़ग़ान संकट
- बर्लिन दीवार का गिरना
- सोवियत संघ का विघटन

by :- M H RABBANI

लोकतान्त्रिक राजनीति

👉 लोकतान्त्रिक राजनीति से अभिप्राय है कि देश में सरकार का गठन लोकतान्त्रिक तरीके से अथार्त जनसधारण द्वारा किया जाए। इस प्रकार सरकार को चलाने के भी लोकतान्त्रिक नियमों का पालन करना आवश्यक है. जैसे देश में राजनीतिक समानता होनी चाहिए। सब नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के मत का अधिकार होना चाहिए। इसमें किसी प्रकार का भेदभाव-रंग, जाति, लिंग आदि के आधार पर नहीं होना चाहिए। एक निश्चित आयु के आधार पर (भारत में 18 वर्ष) सभी को मत का अधिकार होना चाहिए।

👉 लोकतांत्रिक राजनीति में प्रतिनिधियों का चुनाव निष्पक्ष, स्वतंत्र रूप से ऐसी संस्था द्वारा होना चाहिए जो पूर्णतया स्वतंत्र हो, जैसे भारत में चुनाव आयोग पूर्ण रूप से स्वतंत्र है। उस पर न्यायपालिका कार्यपालिका अथवा विधानपालिका का कोई नियंत्रण नहीं है।

👉 चुनाव में प्रत्येक व्यक्ति का एक मत होना चाहिए। किसी को भी कोई विशेष अधिकार प्राप्त नहीं होना चाहिए।

👉 लोकतांत्रिक राजनीति में पारदर्शिता होनी आवश्यक है। सरकार को सभी नीतियों के विषय में जनता को, अगर वह चाहे तो, जानकारी प्रदान करनी चाहिए, जैसे भारत में सूचना के अधिकार अधिनियम 2005 के अंतर्गत नागरिकों को सूचना का अधिकार प्राप्त है। ये सरकार से किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इससे प्रशासनिक कार्यों में आम नागरिकों की सहभागिता बढ़ती है।

सरकार से सवाल पूछने का हक देश के प्रत्येक नागरिक को है। इस कानून की सहायता से कोई भी आम व्यक्ति किसी भी सरकारी कार्यालय में अपना आरटीआई दर्ज कराकर किसी भी तरह की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

जनतान्त्रिकरण / लोकतान्त्रिकरण

👉 जनतंत्रीकरण/लोकतांत्रिकरण से अभिप्राय है किस प्रकार से सरकार को अधिक से अधिक जनतंत्रीय बनाया जा सके ताकि जनसाधारण सरकार के कार्यों में अधिक से अधिक भाग ले सके और उसमें अधिकतम पारदर्शिता हो।

👉 जनतंत्रीकरण में निम्नलिखित नियमों का समावेश होना चाहिए :-

(क) जनसत्ता लोगों के हाथ में होनी चाहिए ताकि वे जब भी सरकार के कार्यों से असंतुष्ट हो तो उन्हें हटा सके। इसके लिए नियमित और निष्पक्ष चुनाव होने चाहिए।

(ख) अगर आवश्यकता हो तो महिलाओं और निम्न वर्गों के लिए विधानपालिकाओं आदि में स्थान आरक्षित होना चाहिए जैसे भारत में स्थानीय संस्थाओं में किया गया है। संसद में भी अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए स्थान आरक्षित किए गए हैं ताकि उनको उचित प्रतिनिधित्व प्राप्त हो सके।

(ग) महिलाओं और निम्न वर्गों को राजनीतिक सत्ता में बराबर की भागीदारी होनी चाहिए।

(घ) सरकार के प्रत्येक स्तर पर जनसाधारण का प्रतिनिधित्व और नियंत्रण प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष होना चाहिए।

(ङ) सरकार के निर्माण में सेना का कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। अगर कहीं पर है तो उसे तुरंत समाप्त कर देना आवश्यक है। इस प्रकार राजनीति सत्ता अधिकतम जनतंत्रिय होनी चाहिए।

(च) चुनाव निष्पक्ष और स्वतंत्र होना चाहिए। इसमें धन का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए ताकि गरीब उम्मीदवार भी चुनाव लड़कर जीतने का अवसर प्राप्त कर सकें।

by :- M H RABBANI

अरब क्रांति / स्प्रिंग / विद्रोह / जागृति

- मध्य पश्चिम एशिया एवं उत्तरी अफ्रीका के देशों में लोकतान्त्रिकरण के लिए चले विरोध आंदोलनों को अरब क्रांति का नाम दिया गया है।
- इसकी शरुवात **ट्यूनिशिया में 18 दिसंबर 2010** को **मोहम्मद बउज़िज़ी के आत्मदाह** के साथ हुई।

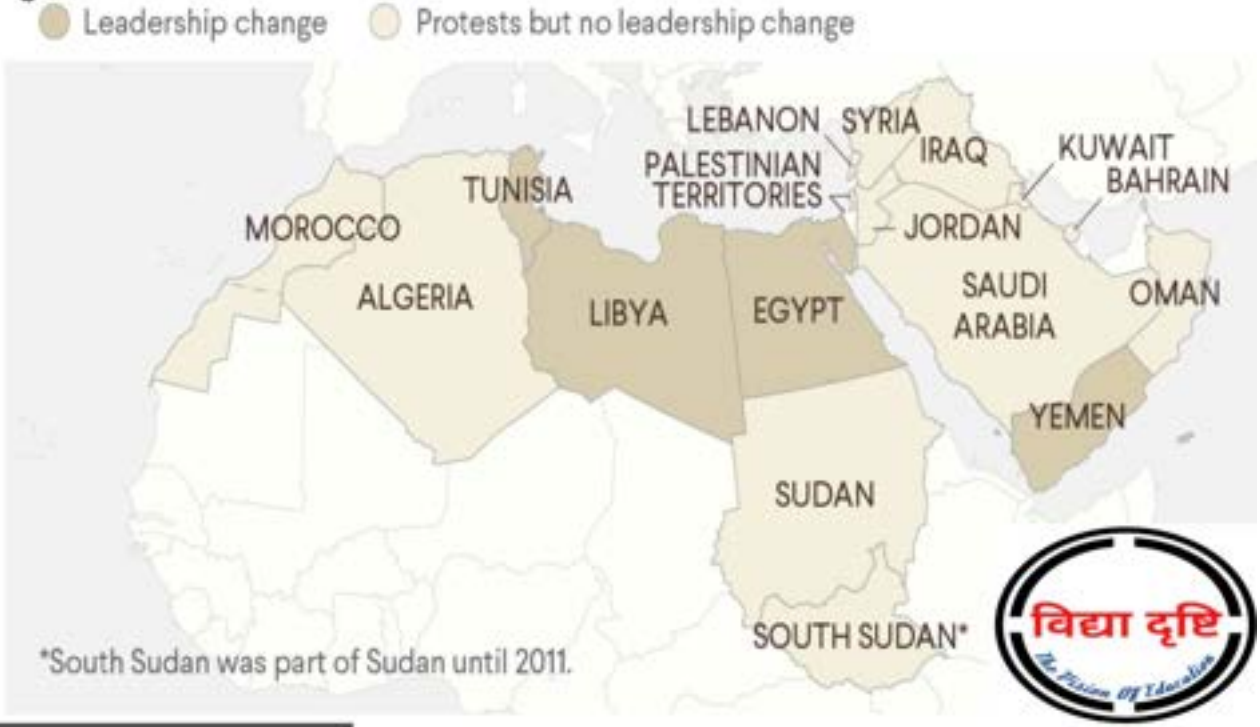

कारण

- तानाशाही सरकार
- मानवाधिकार का उल्लंघन
- बेरोजगारी और निर्धनता
- राजनैतिक भ्रष्टाचार
- बदहाल अर्थव्यवस्था
- मुख्य कारण आम जनता कि वहाँ कि सरकारों से असंतोष एवं आर्थिक असमानता(Expert)

👉 उपरोक्त कारणों के वजह से संघर्ष शरू हुआ जो एक राजनीतिक आंदोलन में परिवर्तित हो गया क्यूंकि लोग अपनी परेशानीयो का मूल कारण निरंकुश तानाशाही को मानते थें।

👉 लोकतान्त्रिकरण की यह माँग ट्यूनिशिया से शरू होकर तुरंत ही पश्चिम एशिया के अरब देशों में फ़ैल गया।

👉 विशाल लोकतान्त्रिक प्रदर्शनों के दबाव में **1979 से मिस्त्र की सत्ता पर काबीज होस्नी मुबारक को सत्ता गवानी पड़ी।**

महत्व

👉 इस क्रांति ने इन क्षेत्रों में लोकतान्त्रिक जागृति को जन्म दिया।

👉 अरब क्रांति ने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा।

👉 तवाकोल करमान, यमन वासी अरब स्प्रिंग के प्रमुख योद्धाओं में से एक थीं जिन्हे 2011 में नोबेल पुरस्कार मिला।

👉 दिसंबर 2011 में 'टाइम' पत्रिका ने अरब क्रांति के विद्रोहियों को " द पर्सन ऑफ़ द ईयर " के ख़िताब से नवाजा।

by :- M H RABBANI

अरब क्रांति से प्रभावित प्रमुख क्षेत्र

🔹 मोरक्को 🔹 ट्यूनिशिया 🔹 लीबिया 🔹 मिस्त्र 🔹 इजराईल 🔹 जॉर्डन 🔹 सिरिया 🔹 इराक 🔹 कुवेत 🔹 बहरीन 🔹 सऊदी अरब 🔹 यमन

अरब क्रांति के दौरान विरोध का तरीका

🔹 **हड़ताल** 🔹 **धरना प्रदर्शन** 🔹 **मार्च और रैली**

अरब क्रांति के दौरान घटनाक्रम

👉 इसकी शुरुआत ट्यूनीशिया में 18 दिसंबर, 2010 को मोहम्मद बऊज़िज़ी के आत्मदाह के साथ हुई। इनकी मृत्यु ने सरकार के असंतुष्ट वर्गों को एक करने का काम किया और सरकार विरोधी प्रदर्शन का दौर शुरु हो गया, जिसमें समाज का हर तबका शामिल था।

👉 ट्यूनीशिया की इस घटना के बाद अरब जगत में अपनी-अपनी सरकारों के विरुद्ध जनविरोध प्रदर्शन का सिलसिला शुरू हो गया।

👉 इसकी आग की लपटें पहले-पहल अल्जीरिया, मिस्त्र,जॉर्डन और यमन पहुंची जो शीघ्र हो पूरे अरब लीग एवं इसके आसपास के क्षेत्रों में फैल गई।

👉 इन प्रदर्शनों के परिणामस्वरूप कई देशों के शासकों को गद्दी से हटने पर मजबूर होना पड़ा।

👉 बहरीन, सौरिया, अल्जीरिया,इराक, सूडान, कुवैत, मोरक्को में भारी जनविरोध हुए, तो वहीं मॉरिटानिया, ओमान,सऊदी अरब,पश्चिमी सहारा तथा फिलिस्तीन भी इससे अछूते न रहे।

👉 क्रांति अलग-अलग देशों में हो रही थी परंतु इसके विरोध प्रदर्शनों के तौर-तरीकों में कई समानताएँ थीं जैसे हड़ताल धरना, मार्च एवं रैली **साधारणतया शुक्रवार** (जिसे आक्रोश का दिन भी कहा जाता है) को विशाल एवं संगठित भारी विरोध प्रदर्शन होता जब जुमे की नमाज अदा कर सड़कों पर आम नागरिक एकत्र होते थे।

👉 **सोशल मीडिया** का अरब क्रांति में अनोखा एवं अभूतपूर्व योगदान था। बेहद ही ढाँचागत तरीके से दूरदराज के लोगों को क्रांति से जोड़ने के लिए सोशल मीडिया का भरपूर इस्तेमाल हुआ।

👉 क्रांतिकारियों को सरकार,सरकार समर्थित हथियारबंद लड़ाकों एवं अन्य विरोधियों से दमन का सामना करना पड़ा। लेकिन **यह अपने नारे "जनता की पुकार शासन का खात्मा हो" के साथ आगे बढ़ते रहे।**

अरब क्रांति और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया

(क) बहरैनी मोरक्कन और सोरियाई विरोध प्रदर्शनों के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया काफी सूक्ष्म रही।

(ख) कुछ आलोचकों ने फ्रांस, ब्रिटेन, अमेरिका सहित कई पश्चिमी सरकारों पर अरब स्प्रिंग पर नकली प्रतिक्रियाओं के आरोप लगाए।

(ग) नोआम चोम्स्की ने आबामा प्रशासन पर क्रांतिकारी लहर को ढकने और मध्य-पूर्व में लोकतंत्रीकरण के प्रयासों को दबाने के आरोप लगाए।

(घ) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने कहा है कि मध्य-पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में अशांति की वजह से तेल की कीमतें पूर्वानुमानित कीमतों से अधिक होने की संभावना है क्योंकि यह क्षेत्र तेल उत्पादन के लिए महत्त्वपूर्ण है।

(ङ) केनन इंजिन नाम के एक जर्मन कुर्दिश राजनीतिज्ञ ने लातिन अमेरिका में 1970 और 1980 के दशकों की **"लोकतंत्र की तीसरी लहर"** से स्पष्ट रूप से मिलती-जुलती गुणात्मक विशेषताओं के कारण अरब और इस्लामी देशों में उठे विद्रोह को "लोकतंत्र की तौसरी लहर" के रूप में पहचाना है।

(च) होस्नी मुबारक जो मिस्र में 1979 से सत्ता में थे, के शासन का अंत हो गया।

by :- M H RABBANI

Page no -11, सोवियत संघ के विघटन से परिवर्तन एवं प्रभाव(Topic)

👉 नए देशों का उदय

- सोवियत गुट के अंत होने से नए 15 देशों का उदय हुआ।
- इन देशों में सुधार के लिए प्रतिक्रिया, आंदोलन एवं गृहयुद्ध होने लगा।
- मध्य एशिया संघर्ष का केंद्र बन गया।
- Baltic, पूर्वी यूरोप के देश यूरोपीय संघ में शामिल हुए।
- NATO का विस्तार हुआ जिसमे सोवियत खेमे के देश भी शामिल हुए।

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

CLASSES AVAILABLE :-

6th to 10th

◆ Maths ◆ Science ◆ English ◆ Sst

11th & 12th

◆ Pol. Science ◆ History

◆ Economics ◆ Accounts ◆ Maths ◆ English ◆ sociology

C-136A, Laxmipark, Near M. S. Memorial Public School, Nangloi, Delhi - 110041

M H Rabbani : 8700467219

(Chief Mentor & Coordinator)

@vidyadrishti